AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

dk;ldkjh efgykvks d lek;ktu ij 0;ko lkf;d vfHkofÙk d çHkko dk vè;;u ¼f'k{kd ,o fpfdRldk d fo'k"k lnHk e½

ORIGINAL ARTICLE

Authors

lat noh]
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

एवं

M,- ¼Jherh½ vferk frokjh]
सह–प्राध्यापक,
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

'kks/k lkj

çLrqr 'kks/k i= e dk;ldkjh efgykvk d lek;ktu ij 0;olkf;d vfHkofÙk d çHkko dk vè;;u ¼f'k{kd ,o fpfdRldk d fo'k"k lnHk e½ fd;k x;k gA çLrqr 'kks/k i= dk eq[; mís'; f'k{kd ,o fpfdRld dk;ldkjh efgykvk d lek;ktu ij 0;olkf;d vfHkofÙk d çHkko dk vè;;u djuk gA 'kks/k i= e dk;ldkjh efgykvk d f'k{kd ,o fpfdRld 0;olk; ij vè;;u fd;k x;k gA U;kn'k d fy, 20 f'kf{kdk ,o 20 fpfdRld dk;ldkjh efgykvk dk U;kn'k d :i e lfEefyr fd;k x;k g rFkk rF;k dk laxg.k djus grq 0;olkf;d vfHkofÙk d fy, M,- ejt egrk rFkk lek;ktu d fy, lek;ktu d fy, M,- çeksn dqekj dh ekiuh dk ç;kx fd;k x;kA fu"d"k :i e ik;k x;k fd dk;ldkjh efgykvk ¼f'k{kd ,o fpfdRld½ d lek;ktu ij 0;olkf;d vfHkofÙk dk lkFkd çHkko iMrk gA

eq[; 'kCn

dk;ldkjh efgyk,] lek;ktu] 0;olkf;d vfHkofÙkA

çLrkouk

जीविकोपार्जन किसी व्यवसाय का चयन या प्रवेश करने, उसमें समायोजित होने तथा प्रगति करने की प्रक्रिया है। यह जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जीविकोपार्जन सम्बन्धी समस्याऐं केवल अनुपयुक्त व्यवसाय चयन का निर्णय, कार्य निष्पादनता, दवाबग्रस्तता व समायोजन से ही सम्बन्धित नहीं होती वरन जीवन के अन्य पक्षों से सम्बन्धित भूमिकाओं से भी सम्बन्धित होती है।

महिलाऐं हमारे देश की जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा हैं और उनकी भागीदारी को विकास के लिये महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रारम्भ से लेकर आज तक स्त्रियों की दशा में परिवर्तन होते रहे हैं, व्यवहारिक तौर पर भारत में स्त्रियों की स्थिति में भारी उतार–चढ़ाव आते रहे हैं।

आधुनिक युग में महिलाऐं पारिवारिक उत्तरदायित्व के साथ–साथ अपने व्यावसायिक दायित्वों का भी वहन

कर रहीं हैं। प्रारम्भ से ही महिलाओं का प्रमुख दायित्व जिम्मेदारियों का निर्वाह करना है तथा बाल्यावस्था से युवावस्था तक उन्हें इसी अभिवृत्ति के विकास के लिये प्रेरित किया जाता है। परन्तु बदलते परिवेश में महिला शिक्षा, औद्योगीकरण एव एकाकी परिवार, महिला स्वतन्त्रता एवं समानता के उद्घोष के कारण महिलाएँ भी अर्थोपार्जन के लिए निकल पड़ी है। आज हमारे देश में अनेक महिलाऐं उच्च पदों पर आसीन अपने कार्य का निष्पादन सफलतापूर्वक कर रही है।

dk;dkjh efgyk,¡

कामकाजी अथवा कार्यकारी महिलाओं से तात्पर्य उन महिलाओं से है जो बढ़ती हुई आर्थिक आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक आय की बढ़ोतरी में सहयोग देती हैं। इनमें मजबूर या विवश महिलाएं ही नहीं बल्कि वे महिलाएं भी सम्मिलित हैं जो एक उपयोगी सामाजिक जीवन–जीना चाहती हैं।

महिलाओं के कार्यरत होने एवं किसी व्यवसाय विशेष को चुनने के सन्दर्भ में नरूला (1967) द्वारा किये गए सर्वेक्षण से इस बात की पुष्टि होती है कि मध्यवर्गीय स्त्रियां अपनी नौकरी के प्रति उदयभावी होती है। वह नौकरी इसलिए करना चाहती हैं क्योंकि इससे उन्हें आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक सन्तुष्टि मिलती है तथा वह परिवार की आमदनी में अपना योगदान कर पाती है। मिर्रा कोमारोवा क्री (1946) में अपने अध्ययन में पाया कि समय व समाज की मांग के अनुरूप भारतीय स्त्रियों का कार्यक्षेत्र अब न केवल घर ही है वरन् वर्तमान समय में वे कुछ उद्योगों में पुरूषों को भी पीछे छोड चली हैं। आज की कार्य करने वाली विवाहिता नारी को दुविधा की स्थिति में पा रही है क्योंकि प्राचीन संस्कृति उससे कुछ अपेक्षायें रखती हैं तथा आधुनिक सन्दर्भ में कुछ अलग।

रॉस ने भी अपने अध्ययन में यह स्पष्ट करते हुए बताया है कि पत्नी का वैतनिक काम धंधों में लगना अब समाज में अनुचित नहीं माना जाता है। निः सन्देह इतनी संख्या में विवाहित मध्यम वर्गीय महिलाओं का विरोध के नौकरी कर सकने का मुख्य कारण यह है कि परिवार के रहन–सहन का स्तर बनाये रखने के लिए पत्नी भी पारिवारिक आर्थिक समस्या को समझने लगी हैं।

महिलाओं के कार्य क्षेत्रों को देखने से ज्ञात होता है कि प्रारम्भ से ही वे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति, शासन प्रशासन ललित कलाओं, साहित्य सृजन, चलचित्रों, सेना, समाज–कल्याण, शिक्षण, नर्सिंग आदि जैसे कार्यक्षेत्रों से जुड़ी रहते हुए समाज में अपना योगदान देती रही है। किन्तु उस समय वे स्वयं की रूचि के अनुरूप कार्य करती थी जिसे पैसों से नहीं आंका जाता था। पारिवारिक आवश्यकताओं के प्रकाश में भी कुछ महिलाएं प्रत्यक्ष से कार्यरत थी। अन्य कार्यों का सम्पादन जैसे–खेती संबंधी घर में बुनाई, कढ़ाई, सिलाई, बड़ी–पापड़ चिप्स, टोकरी बनाना, झाडू बनाना आदि कार्यों को महिलाओं की कार्य कुशलता से जोड़ा जाता था। किन्तु पारिवारिक जरूरतों के कारण इन्हीं अप्रत्यक्ष प्रकार के कार्यों को वर्तमान समय में जीविकोपार्जन हेतु प्रत्यक्ष क्षेत्रों हेतु चुन लिया गया। इनके अतिरिक्त महिलाएं आज व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों जैसे–बैंकों में, टेलीफोन ऑपरेटर के रूप में बीमा कार्यालय, आयकर विभाग, हाईकोर्ट, पुलिस सेवा, विमान चालक, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, चार्टर एकाउटेंट, तथा अन्य निजी उद्योगों में विभिन्न पदों पर कार्य करती नजर आती हैं।

lek;kstu

यह दो शब्दों से मिलकर बना है सम और आयोजन सम् का अर्थ है भली–भांति, अच्छी तरह या समान रूप और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् अच्छी तरह व्यवस्था करना। समायोजन का अर्थ हुआ सुव्यवस्था या अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएं पूरी हो जाएं और मानसिक द्वंद्व की स्थिति न उत्पन्न होने पाए।

गेट्स व अन्य समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

व्यक्ति के जीवन में अनेक बार ऐसी परिस्थितियां आती हैं जिसमें व्यक्ति कठिनाई को अनुभव करता है तथा

अपनी इच्छाओं आवश्यकताओं व अभिलाषाओं की पूर्ति व तत्काल नहीं कर पाता है और ना ही वह संतुष्ट हो पाता है।

0;kolkf;d vfHkofÙk

Mh-Mh lqij d vuqlkj% ''एक व्यक्ति को स्वयं का तथा कार्य जगत में अपनी भूमिका का उपयुक्त एवं समन्वित चित्र विकसित करने तथा स्वीकार करने, इस समप्रत्यय को वास्तविकता के सन्दर्भ में परखने एवं अपनी संतुष्टि और समाज के हित के अनुरूप वास्तविक क्रियाओं में रूपान्तरित करने की प्रक्रिया ही व्यावसायिक अभिवृत्ति है''

M,- foèk% व्यावसायिक अभिवृत्ति व्यवसाय को चुनने उसके लिए तैयार होने उसमें प्रवेश तथा उसमें विकास करने की अभियोग्यता के गुण और रूचि को कहते हैं।''

व्यावसायिक अभिवृत्ति का अभिप्राय है व्यक्ति को व्यवसाय चयन में मदद करने वाली वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से वह स्वयं अपने लिए उपसुक्त व्यवसाय का चयन कर सके उसके लिए अपने को तैयार कर सके एवं उसमें प्रवेश कर उन्नति कर सके क्योंकि व्यावसायिक रूचि व्यवसाय चयन हेतु तथा उसमें दक्षता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है, अतएव व्यावसायिक अभिवृत्ति द्वारा पूरी करती है।

व्यावसायिक अभिवृत्ति व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवसाय के अवसरों के साथ उनके सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति को व्यवसाय के वरण एवं उसकी प्रगति में आने वाली समस्याओं को सुलझाने में प्रदान की जाने वाली सहायता अथवा रूचि अभियोग्यता को व्यावसायिक अभिवृत्ति कहते हैं।

'kks/k dk mís';

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक एवं चिकित्सक) के समायोजन का अध्ययन करना।
2. कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक एवं चिकित्सक) की व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक एवं चिकित्सक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन करना।

ifjdYiuk,a

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाईं हैं:

1. कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
2. कार्यकारी महिलाओं (चिकित्सक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन करना।

'kks/k fof/k

प्रस्तुत शोध हेतु दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

U;kn'kZ

इस शोध समस्या के न्यादर्श के चुनाव हेतु प्रथम चरण में उत्तरप्रदेश के सुजानगंज ब्लॉक के कुल 40 (20 शिक्षिका एवं 20 चिकित्सक) कार्यकारी महिलाओं को सम्मिलित किया गया।

'kks/k midj.k

तथ्यों का संग्रहण करने हेतु शोधार्थी द्वारा व्यावसायिक अभिवृत्ति के लिए डॉ. मंजू मेहता तथा समायोजन के लिए समायोजन के लिए डॉ. प्रमोद कुमार की मापनी का प्रयोग किया गया।

vkdM+ksa dk lkf[;dh; fo'ys"k.k

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

fu"d"kZ

कार्यकारी महिलाओं (चिकित्सक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

rkfydk Ø- 1

कार्यकारी महिलाएं (शिक्षक)	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
समायोजन	13.36	3.2	38	14.99
व्यावसायिक अभिवृत्ति	02.12	1.0		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

38 स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.72 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2. 03 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 14.99 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का सार्थक प्रभाव पड़ता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

rkfydk Ø- 2

कार्यकारी महिलाएं (चिकित्सक)	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
समायोजन	14.69	3.39	38	11.76
व्यावसायिक अभिवृत्ति	4.34	2.00		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

38 स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.72 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.03 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 11.76 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् कार्यकारी महिलाओं (चिकित्सक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का सार्थक प्रभाव पड़ता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

fu"d"kZ

शोध हेतु कार्यकारी महिलाओं में शिक्षक एवं चिकित्सक के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का प्रभाव देखा गया है। शोध निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि मानव के क्रमिक विकास की प्रक्रिया में महिलाओं की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं समायोजन महत्वपूर्ण है जिससे कार्यकारी महिलाओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति धनात्मक एवं ऋणात्मक होने से समायोजन प्रभावित होता है। कार्यरत महिलाओं की व्यवसाय के प्रति यदि अभिवृत्ति अच्छी रहती है तो वे समायोजन कर लेती हैं यदि अभिवृत्ति में थोड़ी सी भी नकारात्मकता आती है तो समायोजन पर प्रभाव पड़ता है। महिलायें चाहे शिक्षिका हों या चिकित्सक हों अपने व्यवसाय के प्रति गंभीर तो रहती हैं परंतु व्यवसाय के प्रति उनकी अभिवृत्ति ही उनके समायोजन को प्रभावित करती है।

lq>ko

1. बालिकाओं में बाल्यावस्था से ही अभिवृत्ति को सकारात्मक पक्ष की ओर अग्रसर कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे आगे चलकर वे अपने व्यवसाय में समायोजन में सकरात्मक रहकर अपने जीवन के उच्चतम शिखर को प्राप्त कर सकें।
2. व्यावसायिक अभिवृत्ति व्यावसायिक सफलता हेतु आवश्यक होती है। इसलिए परिवार में बालिका का पालन–पोषण उचित प्रकार से किया जाए तथा उनको व्यवसाय चुनने में सकारात्मक पक्ष को विकसित किया

जा सके।

3. महिलाओं की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक करने के लिए सहकर्मी द्वारा उचित व्यवहार किया जाए जिससे उनकी कार्य संतुष्टि बढ़ सके ताकि वह भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से सहज समायोजित हो सकें।

lanHkZ lwph

1. गुप्ता सुभाषचन्द्र, (2004). *''कार्यशील महिलाएँ एवं भारतीय समाज'',* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. दुबे, श्यामचरण (1963). *''वूमेन एण्ड वूमैन रोल इन इण्डिया, वूमेन इन न्यू एशिया,''* ब्रदर्स इ. वार्ड पेरिस यूनेस्को।
3. गौड, संजय, (2006). *''आधुनिक महिलाएँ और समाज उत्पीड़न, अत्याचार व अधिकार'',* बुक एनक्लेव, जयपुर, प्रथम संस्करण।
4. गुप्ता सुभाषचन्द्र, (2004). *''कार्यशील महिलाएँ एवं भारतीय समाज'',* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

——==00==——